IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

# प्रभा खेतान के आत्मकथा में जीव–दर्शन के विविध सदंर्भ

**रीना सिंह[1] and डॉ. राघवेन्द्र तिवारी[2]**

शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]

प्राध्यापक विभागाध्यक्ष–हिन्दी, श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)[2]

**सारांशः** प्रस्तुत अध्ययन में प्रसिद्ध व्यापारी समाजसेविका, साहित्य की गहरी समझ रखने वाली प्रभा खेतान के जीवन में आने वाले उतार–चढ़ाव, उच्च आकांक्षाओं की प्राप्ति हेतु किया जाने वाला संघर्ष, अपने ही घर की चौहद्दी के भीतर शोषित होने के बाद भी स्वयं को समाज में स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करने का सफर वर्णित है।

**मुख्य शब्दः** नारी संघर्ष, दृढ़ इच्छा, जर्जर, आत्म चिंतन, श्रृंखला, रचनाधर्मी, उत्तरार्द्ध, संवेदनशीलता, रेखांकित।

**संदर्भ ग्रन्थ सूचीः**

**[1].**प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, 2007 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

**[2].**रेखा कुर्रे, समकालीन परिदृश्य और प्रभा खेतान के उपन्यास, हिन्दी बुक सेन्टर 2019 नई दिल्ली।

**[3].**प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003

**[4].**अरूण महेश्वरी, मासिक 'वागर्थ' (कोलकाता) नवम्बर, 2008

**[5].** प्रभा खेतान, अपने–अपने चेहरे, 1996 किताबघर नई दिल्ली।

**[6].**प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता (1990) अनुाद, हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली

**[7].**डॉ. के. साईलता, 'शिंकजे का दर्द' में दलित जीवन